प्रिय पाठको,

मैं कोई ज्यादा महान लेखक या कोई उपन्यासकार तो नहीं हूँ अपितु एक ऐसा भक्त हूँ जिसने अपने परिवार पर बाबा सूरदास जी के चमत्कार का अनुभव प्राप्त किया है।

भारतवर्ष अपनी प्राचीन सभ्यता के लिए सारे विश्व में जाना जाता है जिसमें कई धर्मों में आस्था रखने वाले अनेक साधु सन्त महात्माओं ने जन्म लिया। यहाँ तक कि स्वयं परमपिता परमेश्वर ने भी समय समय पर अनेक अवतारों में इस पवित्र भूमि पर अवतरण किया। इन्ही महान विभूतियों में से एक श्री श्री 1008 श्री किशोरी शरण जी महाराज ने उत्तराखण्ड़ के जिला पौढ़ी गढ़वाल के एक गाँव गठरी के ब्राह्मण कुल में अवतरित हुए। बुजुर्गों के कथानुसार महाराज जी ने सन् 1931 में जिला फरीदाबाद के तिलपत गाँव में पदार्पण किया। तिलपत एक ऐतिहासिक व पौराणिक गाँव है जिसके हजारों वर्षों पूर्व यहाँ बसे होने के साक्ष्य मिले हैं। ऐसा माना जाता है कि यह गाँव उन्हीं पांच गावों में से एक है जिन्हें पाण्ड़वों ने कोरवों से मांगा था। ये पांचों गाँव तिलपत, सोनीपत, पानीपत, मारीपत तथा बागपत एक वृत्ताकार पथ पर स्थित है तथा ये सभी गाँव ऊँचे टीले हैं। यहाँ तक कि इन्द्रप्रस्थ भी गाँव तिलपत से कुछ ही दूरी पर है। सर्वप्रथम महाराज जी गाँव तिलपत पधारे थे इसी कारण कालांतर में वे बाबा सूरदास जी तिलपत वाले के नाम से विख्यात हुए। तिलपत में पाराशर गोत्र के ब्राह्मण यहाँ के मूल निवासी हैं। बाद में वशिष्ठ व अत्री गोत्र के ब्राह्मण यहाँ आ बसे। तिलपत गाँव का लगभग 52000 बीघे का रकबा है।

प्रारम्भ में सूरदास बाबा गाँव के दक्षिण में स्थित शिव मंदिर में पधारे व गाँव के लोगों को भजन कीर्तन करने के लिए प्रेरित करने लगे। सभी ग्रामवासियों

को राधा बल्लभ सम्प्रदाय का भरपूर ज्ञान दिया। कुछ समय बाद कई भक्तों ने मंदिर के लिए कई एकड़ जमीन का दान दिया और बाबा की असीम कृपा से गाँव के पूर्व में सैकड़ों खजूर के पेड़ों के किनारे एक मंदिर का निर्माण करवाया। बाबा सूरदास जी की आयु के बारे में कोई निश्चित मत नहीं है। हाँ इतना अवश्य है कि हमारे बुजुर्ग भी यही बताते है कि जब बाबा जी तिलपत आए थे तब भी ऐसे ही दिखते थे और इनके शरीर की संरचना में भी समय बीतने के साथ–साथ अन्तिम समय तक कोई खास परिवर्तन नहीं आया था।

बाबा सूरदास जी असीम ज्ञान के भण्ड़ार थे। अनेक वाद्य यन्त्र जैसे ढोलक, तबला, हारमोनियम, झांझ, बांसुरी, सितार, गिटार, बैन्जो इत्यादि वाद्य यंत्रों के ज्ञाता थे। इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार के रोगी की नाड़ी पकड़कर रोग की पहचान करना व आर्युवैदिक औषधि लिखवाकर रोगों का निदान करने में भी पारंगत थे। संस्कृत के प्रकाण्ड़ पण्ड़ित थे और यहाँ तक कि संस्कृत में धारा प्रवाह बोलते थे। उनके द्वारा रचित कई ग्रन्थ जैसे रस कुल्या टीका का हिन्दी भाषान्तर (राधा सुधानिधी) इत्यादि उनके असीम ज्ञान को दर्शाता है।

ऐसा सुना अवश्य है कि योगी अपनी श्वसन क्रिया पर नियन्त्रण करके समाधिस्त हो जाते हैं और कई–कई घण्टे श्वास नहीं लेते परन्तु शायद ही किसी ने ऐसे किसी योगी के दर्शन किए होगें। बाबा सूरदास जी प्रति वर्ष गुरू पूर्णिमा के अवसर पर समाधि में लीन हो जाते थे और तीन– चार घण्टें जब तक सभी भक्त/शिष्य गुरू पूजा–अर्चना करते थे तब तक निश्चल भाव से एक ही अवस्था में समाधिस्त रहते। गुरू पूजा समाप्त होने पर दो–तीन शिष्य उनको उसी अवस्था में उठाकर उनकी चारपाई पर विराजते और तब जाकर धीरे–धीरे उनकी श्वसन क्रिया सामान्य होती। ऐसा करते हुए उन्हें केवल मैनें ही नहीं अपितु लाखों श्रद्धालुओं ने प्रति वर्ष गुरू पूर्णिमा के अवसर पर देखा है। ऐसे विलक्षण योगी थे बाबा सूरदास जी महाराज।

अब अन्त में, मैं जिस घटना का वर्णन करने जा रहा हूँ उसका साक्षी मैं स्वयं हूँ। यह घटना सन् 1969 की है जब मैं बी.एस.सी अन्तिम वर्ष का छात्र था। परीक्षा से पहले लगभग एक महीने की तैयारी के लिए छुट्टियाँ हो गई थी और मैं परीक्षा की तैयारी करने के लिए मंदिर से थोड़ी दूर खजूर के पेड़ों के बीच शांत वातावरण में अध्ययनरत था, तभी किसी ने मुझे सूचित किया कि मेरे बाबा (जहारिया)

मरणासन्न अवस्था में है और मैं तुरन्त घर पहुँच जाऊँ। मेरे बाबा (जहारिया) की आयु उस समय लगभग 92 वर्ष थी और वे बाबा सूरदास जी के अनन्य भक्त थे। वे बहुत ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे और 24 घण्टों में से लगभग 12 घण्टें पूजा पाठ और ठाकुर ध्यान में लीन रहते थे क्योंकि इनका जन्म नवमी वाले दिन हुआ था इसलिए मेरे बुजुर्गों ने इनका नाम जहारिया (जाहर बाबा गोगाजी के नाम पर) रख दिया। मैं जब घर पहुँचा, तब बाबा जहारिया अचेतावस्था में थे। चारपाई से उतारकर उन्हें नीचे फर्श पर फूंस बिछाकर उसके ऊपर लिटाया हुआ था। गावों में पहले ऐसी ही परम्परा थी। पेशाब के रास्ते रक्त जा रहा था व बहुत देर बाद कोई–कोई सांस आ रही थी । कहने का अर्थ यह कि वे मरणासन्न अवस्था में थे क्योंकि घर पर मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं था, मैं अपने पिताजी (स्वः श्री लिखी राम) व बड़े भाई (देवराज) को सराय ख्वाजा से फोन करने व घर बुलाने के लिए चला गया। यह सुविधा उन दिनों गावों में उपलब्ध नहीं थी।

संयोगवश उस दिन बाबा सूरदास जी मंदिर पर ही विद्यमान थे। अन्यथा गाँव में जब भी किसी की मृत्यु होती थी तो बाबा गाँव में विद्यमान नहीं होते थे, ऐसा हमारे पूर्वज हमें बताते थे। मेरे ताऊ जी (स्वः श्री जयमल) किसी तरह अनुनय विनय करके बाबा सूरदास जी को हमारे घर ले आए। मैं जब फोन करके घर वापस आया तब बाबा सूरदास जी व मेरे ताऊ जी, दानों हमारी बैठक पर मुझे बैठे हुए मिले। मेरे ताऊ जी बाबा सूरदास महाराज के सामने रोते हुए कह रहे थे कि यहाँ परिवार में से अधिकांश सब ड्यूटी पर हैं तब इनका अन्तिम संस्कार कैसे होगा। पहले तो बाबा सूरदास जी हंसकर कहने लगे ''मामा तू फिकर मत कर, मैं फुकवा आऊगों''। अन्त में बहुत प्रार्थना करने पर कहने लगे ''भैया तू ना माने है तो चल इन्हें मैं तीन महीने के लिए और खीचें देता हूँ परन्तु मेरी एक शर्त तुझे माननी होगी। तुम तीन महीने इनकी डटकर सेवा करोगे। ऐसा कहकर बाबा सूरदास जी ने बाबा जहारिया के सिर पर अपना हाथ रख दिया। इस समय तक शाम के 5 बज चुके थे। इसके पश्चात् बाबा सूरदास जी मेरे ताऊ जी के साथ वापस धर्मशाला (मंदिर) पर चले गए। हमने अपने बाबा जहारिया को वापिस उसी अवस्था में चारपाई पर लिटा दिया।

आश्चर्य ! धीरे–धीरे उनकी सांसे सामान्य होती चली गई। रात बीतने पर भोर हुई और वे अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर मंदिर पर जाने के लिए तैयार

हो गए। विज्ञान का छात्र होने के कारण मेरे अन्दर इन चीजों को जानने की बड़ी जिज्ञासा रहती थी। कहाँ तो उनकी हालत शाम 5 बजे तक मरणासन्न अवस्था में थी और कहाँ रात बीतते–बीतते वह अपने पैरों पर स्वयं चलकर मंदिर जाने के लिए आतुर थे जबकि मंदिर मेरे घर से लगभग आधा किलोमीटर की दूरी पर है। बाबा जहारिया ने मेरे कन्धे पर हाथ रखा व दूसरे हाथ से लाठी का सहारा लेते हुए मंदिर की ओर धीरे–धीरे मेरे साथ चल दिए। उन दिनों कुएं के समीप नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ थी। महाराज जी उन सीढ़ियों से उतर ही रहे थे, तभी हम वहाँ पहुँच गए। बाबा जहारिया ने सूरदास बाबा जी के चरण स्पर्श किए और एक रूपया दक्षिणा दी। बाबा सूरदास जी बोले :–

महाराज जी – भैया जहारिया

जहारिया – हाँ बाबा

महाराज जी – भैया और बटौर ले जो तो पे बटौरो जाय

जहारिया – अच्छा बाबा

बाबा सूरदास जी के दर्शन करके मेरे बाबा जहारिया मेरे साथ वापिस घर आ गए। इसके पश्चात् मैंने एक–एक दिन का हिसाब रखना प्रारम्भ किया। ठीक तीन महीने बाद, ना एक दिन ऊपर, ना एक दिन नीचे, उनका शरीर पूरा हो गया। संयोग देखिए, उनका जन्म नवमी वाले दिन हुआ था और स्वर्गवास भी नवमी वाले दिन हुआ। अब आप इसे क्या कहेंगे ? मैं मान लेता हूँ कि उनमें कोई–कोई सांस बाकी थी और संयोग से वो स्वस्थ हो गए। लेकिन आगे वो तीन महीने का समय, आप स्वयं विचार कीजिए। ऐसे महान सन्त, महान योगी एवं दिव्य दृष्टि को मेरा कोटि–कोटि नमन् !

मास्टर ओम प्रकाश अत्री
तिलपत
09540656524